में संचित होने लगते हैं, जो पेयजल के साथ मानव शरीर में
कर विषैले नाइट्राइट्स में बदल जाते हैं।
कीटनाशी रसायनों से प्रदूषित जल के प्रयोग से अत्यधिक
कारक प्रभाव होते हैं। आर्सेनिक विष युक्त पेयजल के सेवन से
की क्षति, त्वचा रोग व कैंसर जैसी बीमारियां होती है। रेडियोधर्मी
कों युक्त जल के सेवन से वृक्क, नेत्र, त्वचा, तन्त्रिका तन्त्र,
जनन ग्रन्थियां आदि गम्भीर रूप से प्रभावित होते हैं। रेडियोधर्मी
टीटियम से प्रदूषित जल का प्रयोग करने पर विकृत शिशु पैदा
हैं। वाहित मल से प्रदूषित जल के प्रयोग से विभिन्न सूक्ष्मजीवी
में पहुंचकर हैजा, पेचिश, टाइफाइड, अतिसार, पीलिया,
शोथ आदि रोग फैलाते हैं। नारु रोग भी प्रदूषित जल के कारण
फैलता है। प्रदूषित जल में स्नान करने पर त्वचा रोग हो जाते हैं।

(2) **वनस्पति पर**—वनस्पति पर प्रदूषित जल का अत्यधिक
भाव पड़ता है। जलीय पादप इससे अधिक प्रभावित होते हैं। उर्वरकों
कारण जल में नाइट्रेट व फॉस्फेट के मिश्रित होने से शैवालों व
लकुंभी की तीव्र वृद्धि होती है। बैक्टीरिया जनित अपघटन तीव्र
से जल में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा कम होने लगती है। कुछ
प्लैंक्टम व शैवाल के अलावा प्रदूषित जल में अधिकांश पादप नष्ट
जाते हैं। जल की सम्पूर्ण सतह जलकुंभी या शैवाल से ढक जाने
सूर्य प्रकाश जल में नहीं पहुंच पाता है, इससे जलीय पादपों की
द्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उद्योगों द्वारा छोड़े जाने वाले उष्ण
से उच्च तापक्रम के प्रति सहनशीलता रखने वाले जलीय पादप
हो जाते हैं। उद्योगों के बहिःस्राव से प्रभावित क्षेत्रों में बहुत कम
जीवित रह पाते हैं। अम्लीय वर्षा के कारण वन सम्पदा को
धिक हानि होती है।

(3) **जन्तुओं पर**—जल प्रदूषण का सर्वाधिक दुष्प्रभाव जलीय
यों पर पड़ता है। उद्योगों के प्रदूषणकारी बहिःस्राव से, समुद्र की
ह पर तेल के फैल जाने से तथा समुद्रों में किए जाने वाले परमाणु
क्षणों से अनेक जीव मर जाते हैं। उद्योगों द्वारा छोड़े जाने बाले
निकारक रसायनों के कारण नदी के निचले भाग में मछलियों की
या घट जाती है। नदी तट पर स्थित रासायनिक खाद के कारखानों
छोड़े जाने वाले प्रदूषित जल से काफी दूरी तक मछलियां मर
ती हैं।

प्रदूषित जल में शैवालों व जलकुंभी की अधिक वृद्धि होने पर
में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिससे जलीय जीव मरने
ते हैं।

(4) **कृषि पर**—प्रदूषित जल से उपजाऊ मृदा संसाधनों को हानि
ती है। उद्योगों से निकलने वाले जल में मिले हुए हानिकारक रसायन
की उर्वरता नष्ट करते हैं, जिससे भूमि बंजर हो जाती है। राजस्थान